RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 February 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd February 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : सोलहवां
अंक : दसवां
फरवरी : 2019

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा अपने जन्मदिन पर प्रेमियों को एक खास संदेश
संदेश 5

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
अहंकार 7
(गुरु नानकदेव जी की बानी) (16 पी.एस. राजस्थान)

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से एक
उपदेश 17

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
'शब्द-नाम' 19
(स्वामी जी महाराज की बानी) (कोलोराडो)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
आश्रम 31

सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब 34

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **परमजीत सिंह, ज्योति सरदाना**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस - 1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 203- मूल्य - पाँच रुपये
E-mail : dhanajaibs@gmail.com **Website :** www.ajaibbani.org

6 फरवरी , कृपाल सिंह जी महाराज का शुभ जन्मदिवस

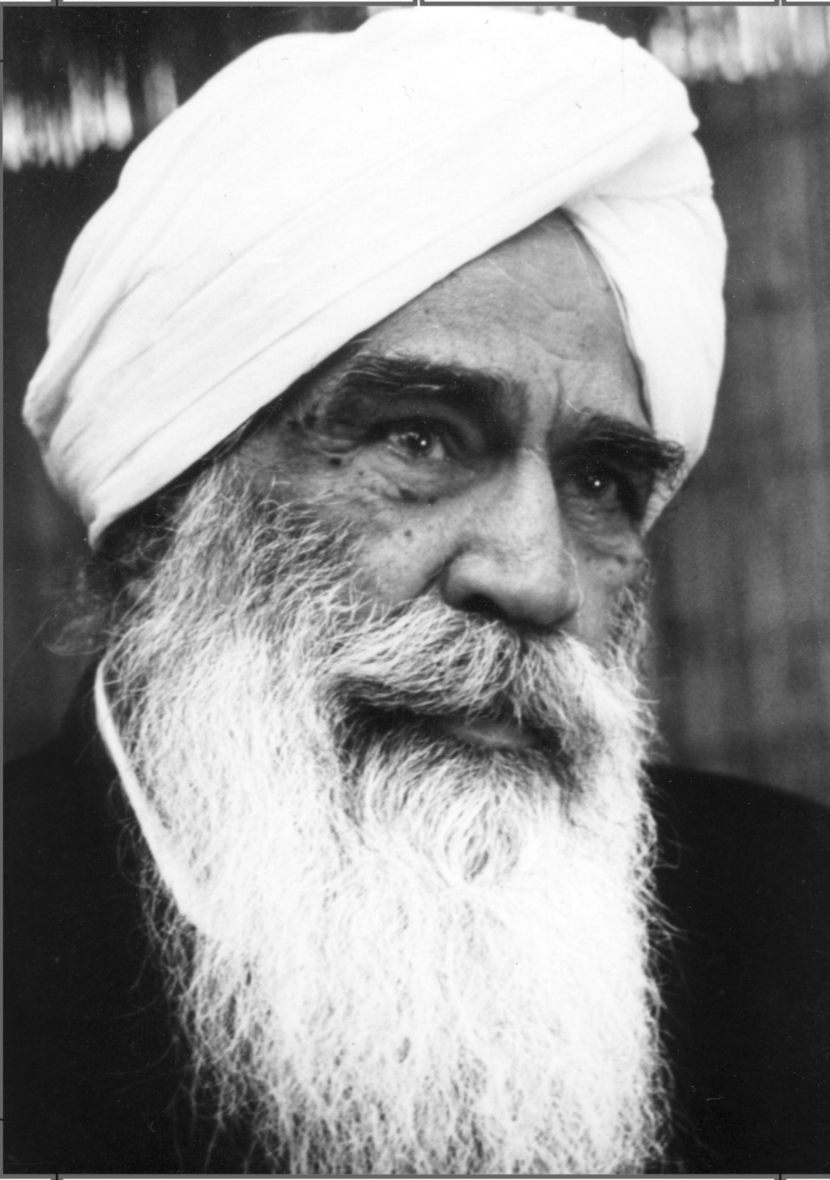

संदेश

प्यारे भाईयो और बहनों,

मेरा शारीरिक जन्म 6 फरवरी सन् 1894 को हुआ लेकिन मेरा असली जन्मदिन फरवरी सन् 1924 है, जब मैं जिस्मानी तौर पर महाराज सावन सिंह जी के पवित्र चरणों में आया। मेरा असली पुनर्जन्म सन् 1917 में हुआ, जब महाराज सावन सिंह जी को देह स्वरूप में मिलने के सात साल पहले मैंने आपकी दया से अंदर आपके दर्शन किए थे।

सभी सन्त-महात्माओं ने दुनिया में आकर अपनी बानी द्वारा उपदेश दिए। मैं सभी सन्तों की लेखनियों की बड़ी इज्जत करता हूँ क्योंकि परमात्मा ने उन्हें बानियां लिखने की प्रेरणा दी।

मेरे बहुत अच्छे भाग्य थे कि मुझे अपने गुरु के चरणों में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे मेरे गुरु से जो मिला है मैं वही आप लोगों के साथ बाँट रहा हूँ। मुझे सभी महापुरुषों की शिक्षा एक समान लगती है फर्क सिर्फ भाषा का या समझाने के तरीके का है लेकिन मतलब सबका एक ही है। सभी महापुरुषों ने यही बताया है कि हमने अपनी आत्मा को मन और दुनियावी विषयों से कैसे आजाद करना है। उन्होंने हमें बताया कि खुद को पहचानें और परमात्मा को जानें।

नाम देते समय सतगुरु शब्द-रूप बनकर सेवक के अंदर बैठ जाते हैं। वे दुनिया के अंत तक हमेशा आपके साथ रहते हैं और आपकी हर मुनासिब मदद करते हैं। वे न सेवक को छोड़ते हैं और

न ही सेवक को भूलते हैं। जो भी सच्चे मन से उन पर श्रद्धा रखते हैं वे उन्हें सच्ची शान्ति बख्शते हैं।

हर व्यक्ति के लिए उम्मीद है। इस संसार में गुरु ताकत पापियों को बचाने और उन्हें परमार्थ के मार्ग पर डालने के लिए आती है। हमें उन पर श्रद्धा रखनी चाहिए और उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए, बाकी जो भी करना है गुरु अपने आप करेंगें।

प्रभु प्रेम है आप भी प्रेम हैं। परमात्मा को प्राप्त करने के लिए प्रेम एक प्रभावशाली जरिया है। जो प्यार नहीं करता वह परमात्मा को नहीं जानता इसलिए परमात्मा को दिल से आत्मा से और मन से प्यार करें।

मैं चाहता हूँ कि आप सिर्फ सुनें ही नहीं खुद करें भी। एक पल का भजन-अभ्यास अनेंको सिद्धांतों को सुनने से ज्यादा कीमती होता है। दूसरों को सुधारने की बजाय खुद को सुधारने की ज्यादा जरूरत है, आपको परमात्मा प्राप्त हो जाएगा।

इस जीवन का रहस्य उनकी संगत में जाकर सुलझाया जा सकता है जिन्होंने खुद यह मसला हल किया हो। हम ऐसी हस्ती को कैसे ढूंढ सकते हैं? वही हमें उस सच को प्राप्त करने में हमारी मदद कर सकता है।

मैं शुभकामना करता हूँ कि आप सभी परमात्मा प्राप्ति के मार्ग पर शीघ्रता से बढ़ें जोकि आपके ऊपर निर्भर करता है। मेरा प्यार और मेरी शुभकामनाएं हमेशा आपके साथ हैं और हमेशा आपके साथ रहेंगी।

04.02.1954

***

अहंकार

सन्त-महात्मा जब भी इस संसार में आए उन मालिक के प्यारों ने हमें मनुष्य जामे का मूल्य बताया। महात्मा समझाते हैं कि पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों की वजह से हमें यह मनुष्य जन्म मिला है। इस चोले में ही हम परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं।

महात्मा सिर्फ ज्ञान ही नहीं देते बल्कि यह वायदा भी करते हैं कि अगर हम बाहर से ध्यान हटाकर अंदर 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ें तो वे वहाँ भी हमारी मदद करते हैं।

इसी तरह जब भी सन्त-महात्मा दुनिया में आए तो उन्होंने हमें मनुष्य जामे की कीमत समझाई और अंदर जाने की प्रेरणा भी दी। सन्तों ने हमें खोलकर समझाया कि इस शरीर में कौन से बुरे तत्व हमें धोखा देते हैं कौन से अच्छे तत्व हमें भक्ति की तरफ ले जाते हैं और परमात्मा के घर पहुंचने में हमारी मदद करते हैं।

महात्मा रविदास जी कहते हैं, ''ये पाँच डाकू कभी शान्त नहीं होते। ये हमारे अन्दर ऐसी आग पैदा करते हैं जो बढ़ती ही जाती है। हम इन्हें जितना खिलाते हैं ये उतना और माँगते हैं। ये डाकू इन्सान तो क्या, जीव-जन्तुओं को भी नहीं छोड़ते।''

इन पाँच डाकुओं की माँ चालाकी है। यह कहती है कि तुम्हारा इस दुनिया में आना तभी सफल है जब तुम धन, शोहरत इकट्ठा कर लो या किसी संस्था के नेता कहलवाओ। इस तरह ये पाँचों भाई हमारे अंदर आ जाते हैं। **अहंकार** इन सबका नेता है। सबसे पहले हमारे अंदर अहंकार आता है फिर यह अपने और भाईयो के लिए दरवाजा खोलकर इन्हें भी अंदर बुला लेता है।

शुरू-शुरू में ये पाँचों डाकू अच्छे लगते हैं। **अहंकार** कहता है कि दूसरों की तरह तुम्हारा भी इस धरती पर रहने का हक है। तुम आज़ाद हो, तुम्हारे बच्चे भी आज़ाद होने चाहिए। तुम्हारे पास भी वह सब कुछ होना चाहिए जो औरों के पास है फिर यह जीव को धीरे-धीरे प्रेरित करता है कि तुम्हारा नाम और शोहरत होनी चाहिए। इस तरह **अहंकार** आपके अंदर राक्षस की तरह बस जाता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि योगियों को योग का अहंकार होता है। योगी कहते हैं, ''हम सबसे अच्छे हैं।'' सन्यासियों को अपने सन्यास लेने का **अहंकार** होता है। सन्यासी कहते हैं, ''हमने सब कुछ त्याग दिया है हमारे जैसा कौन है?'' पंडितों को अपनी पंडिताई का अहंकार होता है। पंडित कहते हैं, ''हमने सब वेद-पुराण पढ़े हैं, हमारे जैसा कौन है?''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''**अहंकार** हमारा नाश कर देता है। अहंकार की वजह से परिवार में, दोस्तों में छोटे-छोटे झगड़े होते हैं फिर देशों के बीच युद्ध होते हैं।''

तुलसी साहब कहते हैं, ''सोना-चाँदी और काम-वासना को त्यागना आसान है लेकिन **अहंकार**, नाम और शोहरत को त्यागना बहुत मुश्किल है।''

ऋषि-मुनि भी कहते हैं, ''हमने **अहंकार** और माया को त्यागा हुआ है।'' वे घर-बार छोड़कर जंगलों में जाकर परमात्मा की भक्ति करने में लगे हुए हैं लेकिन वे भी माया को त्याग नहीं सके। जो अंदर की माया से मुक्त हो जाता है वही असली साधु है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''**अहंकार** की वजह से ही हमारा बार-बार जन्म-मरण होता है और हमें बार-बार माता के गर्भ की आग में जलना पड़ता है।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जीव **अहंकार** से भरा हुआ आता है और **अहंकार** में भरा हुआ ही चला जाता है। इसी **अहंकार** की वजह से यह अपने आपको चालाक समझता है और सब कुछ **अहंकार** की वजह से ही करता है।''

गुरु अर्जुनदेव जी ने **अहंकार** को तपेदिक की बीमारी जैसा बताया है। जैसे मतवाले हाथी काम-वासना के लिए भटकते हैं। मधुमक्खी शहद की ओर जाती है। मछली पानी के बिना तरसती है उसी तरह यह जीव भी अहंकार की तरफ खिंचा चला जाता है। हमें इस बीमारी से कोई नहीं बचा सकता।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''ये पाँचों लाइलाज बीमारियाँ हैं। इनका इलाज सिर्फ हमारे सतगुरु के पास है। सतगुरु ही हमें इनसे बचा सकते हैं।''

हमारी भी यही हालत है अगर हम 'नाम' लेकर सतसंग में आकर इन पाँचों डाकुओं में से किसी एक के भी शिकार हैं तो लोग कहेंगे कि देखो! यह सतसंग में जाता है, नाम भी जपता है फिर भी इन डाकुओं के बीच फँसा हुआ है। इसमें 'नाम' देने वाले गुरु का क्या कसूर है?

हमारे बहुत से भाई-बहन जब इन्टरव्यू में मिलते हैं तो बताते हैं कि वे मन के हाथों खिलौना बने हुए हैं। वे कहते हैं कि हमने बूढ़ों जैसे कपड़े पहने हुए हैं, क्या हम काम से बच जाएँगे?

भर्तहरि एक बहुत अच्छा राजा था। जब उसे इन पाँचों डाकुओं ने तंग किया तो उसने अपने राज्य का त्याग कर दिया। राज्य का त्याग करने के बाद जब वह चला जा रहा था, उसने रास्ते में देखा कि एक कुत्ता जिसके सिर में कीड़े पड़े हुए थे, पूँछ कटी हुई थी और शरीर जख्मों से भरा हुआ था फिर भी वह एक कुतिया के

साथ भोग-वासना करना चाहता था। राजा भर्तहरि ने अपने मन को धिक्कार लगाई कि हे मन! यह कुत्ता मरने के किनारे है फिर भी इस तरफ से नहीं हट रहा।

परम पिता कृपाल कहा करते थे, ''कबूतर बिल्ली को देखकर आँखें बन्द कर लेता है कि बिल्ली मुझे नहीं दिख रही लेकिन थोड़ी देर बाद ही कबूतर अपने-आपको बिल्ली के मुँह में पाता है।''

इसलिए प्यारेयो! हमारे लिए यही बेहतर है कि हम इन डाकुओं के जाल में फँसने से पहले ही 'नाम' की कमाई करें। इन्द्रियों के भोगों से ऊपर उठकर नाम के साथ जुड़ जाएं।

हमारी देह सच्चा मन्दिर है, इसमें अमृत से भरा हुआ कुआँ है। ये पाँचों डाकू इस शरीर में दाखिल होकर अमृत को पी जाते हैं। इस देह के नौं दरवाजे हैं जब हम किसी भी दरवाजे को खुला छोड़ देते हैं तो ये डाकू एक-एक करके हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। अन्त में ये पाँचों डाकू हमारे शरीर में दाखिल हो जाते हैं।

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ॥
हउ विचि जमिआ हउ विचि मुआ॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''यह जीव हौमें में ही आता-जाता है और हौमें में ही जन्मता-मरता है।''

हउ विचि दिता हाउ विचि लइआ॥
हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ॥

अगर यह किसी को दान देता है तो **अहंकार** करता है कि मैंने इतना दान दिया है। दान लेने वाले को भी इस बात का **अहंकार** होता है कि शायद मुझमें कोई खूबी होगी कि मैं स्कूल या मन्दिर के लिए इतना दान ला सका।

आजकल तो हम अखबारों में छपवाते हैं कि मैंने इतनी जमीन स्कूल, मन्दिर या चर्च को दान दे दी है। मुझे कई समाजों में जाने का मौका मिला है। मैंने देखा है अगर कोई दो-चार आदमियों को खाना खिला दे तो वह बड़ी-बड़ी अरदासें करता है, ''हे परमात्मा! तू इसे लेखे में लगाना कि मैंने इतने लोगों को खाना खिलाया है, कपड़े, लोटे इत्यादि दान दिए हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन बोलया सब कुछ जाणंदा किस पे करिए अरदास।

गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं, ''देख प्यारेया! तू सोचता बाद में है परमात्मा सुन पहले लेता है। परमात्मा हाथी से पहले चींटी की पुकार सुनता है।'' यह जीव हौमें से ही पाता है और हौमें में ही गंवा देता है।

हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु॥
हउ विचि पाप पुंन वीचारु॥

आप कहते हैं कि जीव **अहंकार** में ही पाप और पुण्य का निर्णय करता है। **अहंकार** में आकर ही चालाकी करता है और **अहंकार** में आकर ही झूठ बोलता है।

हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु॥
हउ विचि हसै हउ विचि रोवै॥

अहंकार की वजह से ही यह जीव नर्कों और स्वर्गों में जाता है, अहंकार की वजह से ही जगह-जगह जन्म लेता है।

हमारे पास एक ऊँट था। हमने उसकी देखभाल के लिए एक आदमी भी रखा हुआ था। वह ऊँट सीधा चलने की बजाए उल्टा चलता और उस आदमी को काटने के लिए दौड़ता था। वह आदमी उसे डंडों से पीटता था। लेकिन अफसोस! वह ऊँट थोड़ा समय सीधा चलकर फिर उसी तरह उल्टा चलने लग जाता था। यह सब

देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ। मैंने ऊँट से कहा, ''देख! अब तू ऊँट बन गया है, मुँह से गूँगा हो गया है लेकिन अभी भी तेरा **अहंकार** खत्म नहीं हुआ।''

हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै॥
हउ विचि जाती जिनसी खोवै॥

आप कहते हैं, ''यह जीव **अंहकार** में ही सारे काम करता है अगर अपनी जाति छोड़कर दूसरी जाति धारण करता है तो वहाँ भी अंहकार इसका पीछा नहीं छोड़ता। अगर तीर्थों पर जाकर तन की मैल धोता है तब भी इसे अंहकार है।''

हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा॥
मोख मुकति की सार न जाणा॥

आप कहते हैं, ''मूर्ख और समझदार दोनों ही अंहकार में हैं। **अंहकार** की वजह से ही हमने मुक्ति की युक्ति प्राप्त नहीं की नाम प्राप्त नहीं किया।''

हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ॥
हउमै करि करि जंत उपाइआ॥

माया और उसकी परछाई अहंकार में ही है, अहंकार में ही इसने जन्म लिया।

हउमै बूझै ता दरु सूझै॥
गिआन विहूणा कथि कथि लूझै॥

अहंकार बुरी चीज़ नहीं अगर हमें यह समझ आ जाए कि यह हमारे अंदर क्यों रखी गई है? अगर हम इसका ठीक तरीके से इस्तेमाल करें तो हमें अपने सच्चे घर की पहचान हो सकती है।

नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥
जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा ने सबके मस्तक में लेख लिख दिए हैं। हम जिस तरह देखते हैं परमात्मा भी हमें उसी तरह देखता है।''

एक बूढ़ी औरत मूर्ति पूजा किया करती थी। एक दिन उसके दिल में ख्याल आया कि जब तक यह मूर्ति भोग नहीं लगाएगी मैं तब तक खाना नहीं खाऊंगी। उसने मूर्ति के आगे सोने की कटोरी में दूध और थाली में रोटी रख दी लेकिन पत्थर की मूर्ति क्या भोग लगाती? परमात्मा ने सोचा! यह बूढ़ी औरत हठ किए बैठी है मैं इसके पास जाकर इसकी रोटी खा आऊं।

परमात्मा ने एक बूढ़े कुबड़े आदमी का रूप धारण करके उस बूढ़ी औरत के घर जाकर कहा, ''मैं कई दिनों से भूखा हूँ, तू मुझे रोटी दे दे।'' उस बूढ़ी औरत ने कहा, ''मेरे पास एक ही रोटी है वह मैंने ठाकुर के आगे रखी है अगर ठाकुर भोग लगा दें तो मैं वह रोटी तुझे दे सकती हूँ।'' आखिर वह कुबड़ा आदमी निराश होकर चला गया।

परमात्मा ने फिर एक गरीब आदमी का भेष धारण करके उस बूढ़ी औरत के पास जाकर कहा, ''मेरे पेट में दर्द हो रहा है तू मुझे थोड़ी सी चाय बनाकर दे दे।'' बूढ़ी औरत ने कहा, ''दूध तो ठाकुर को भोग लगाने के लिए ही है।'' अगर उस बूढ़ी औरत को यह ज्ञान होता कि सबके अंदर वह परमात्मा बैठा है तो वह जीवित ठाकुर को अपने घर के दरवाजे से वापिस न भेजती।

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥

हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि एह जाइ॥
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि॥
हउमै दीरघ रोग है दारू भी इसु माहि॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि॥

आप कहते हैं, ''हौमें ही जन्म-मरण का कारण है, यह मीठी तपेदिक, दीर्घ रोग है। परमात्मा ने दया करके दवाई भी इसके अंदर ही रखी है। वह परमात्मा जिन पर अपनी दया-मेहर करता है उन्हें 'नाम' दे देता है। हम नाम की कमाई करके इस असाध्य रोग से बच सकते हैं।''

सेव कीती संतोखीई जिन्ही सचो सच धिआइआ॥

आप कहते हैं, ''वही सेवा कर सकता है जिसके अंदर सन्तोष है। 'शब्द-नाम' की कमाई करने वालों के अंदर **अंहकार** नहीं होता। 'शब्द-नाम' की कमाई करने वालों को गुरु की तरफ से जो भी सेवा मिल जाए चाहे जूते झाड़ने की हो, चाहे लंगर बनाने की हो वे उस सेवा को बहुत प्रेम-प्यार से करते हैं।''

मैं बताया करता हूँ कि मुझे आर्मी से बहुत कुछ सीखने को मिला। मुझे वहाँ ज्यादा से ज्यादा हुक्म मानने की प्रेरणा मिली। आर्मी के हुक्म बड़े सख्त होते हैं। वहाँ जिसको जो काम कहा जाता है उसे वह करना पड़ता है।

मैं आर्मी में अपनी खुशी से नहीं गया था। दूसरे विश्वयुद्ध के समय सरकार हमें जबरदस्ती आर्मी में ले गई थी। मैंने सोचा कि जब काम करना ही है तो उसे दिल लगाकर करना चाहिए, इससे मेरे अफसर मुझ पर मेहरबान हुए।

जब मुझे हुजूर मिले उन्होंने मुझे जो हुक्म दिया मैंने उसे खुशी-खुशी स्वीकार किया। मैं हमेशा कहा करता हूँ कि मेरे बहुत अच्छे भाग्य थे जो मुझे बचपन से ही हुक्म मानने की आदत पड़ी।

कई प्रेमी अपने पत्रों में लिखते हैं कि हमारा मन हमें भजन पर नहीं बैठने देता, गिट्टे-गोडे दुखते हैं और भी कई परेशानियां लिखते हैं। साथ में यह भी लिखते हैं कि अभ्यास करने की जो दवाई आपने हमें बताई है वह हम नहीं करते। सोचकर देखें! अभ्यास के बिना क्या इलाज है?

ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ॥
ओन्ही दुनिआ तोड़े बंधना अनुं पाणी थोड़ा खाइआ॥
तू बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ॥
वडिआई वडा पाईआ॥

आप कहते हैं, ''सन्तोष वाला इन्सान सेवा करता है, नाम जपता है, सच्चा इन्सान बन जाता है। नाम जपने वाला बुराई की तरफ नहीं जाता, नेक कमाई करता है और अपनी कमाई को लंगर में डालकर उसे पवित्र कर लेता है। प्यार से ही दुनिया के बंधन तोड़ देता है। उसकी खुराक बहुत कम होती है।''

गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं, ''वह अल्पाहारी बन जाता है। ऐसा साधु कम खाता है, कम पीता है और कम सोता है। उसका शरीर पवित्र होता है। वह नाम की कमाई करके परमात्मा को अपने ऊपर खुश कर लेता है। परमात्मा उस पर नाम की बख्शिश करता है जो कभी कम नहीं होती बल्कि बढ़ती जाती है। उस पवित्र आत्मा की यही विशेषता है कि वह अपने सतगुरु परमात्मा को अपने अंदर प्रगट कर लेता है।''

❂ ❂ ❂

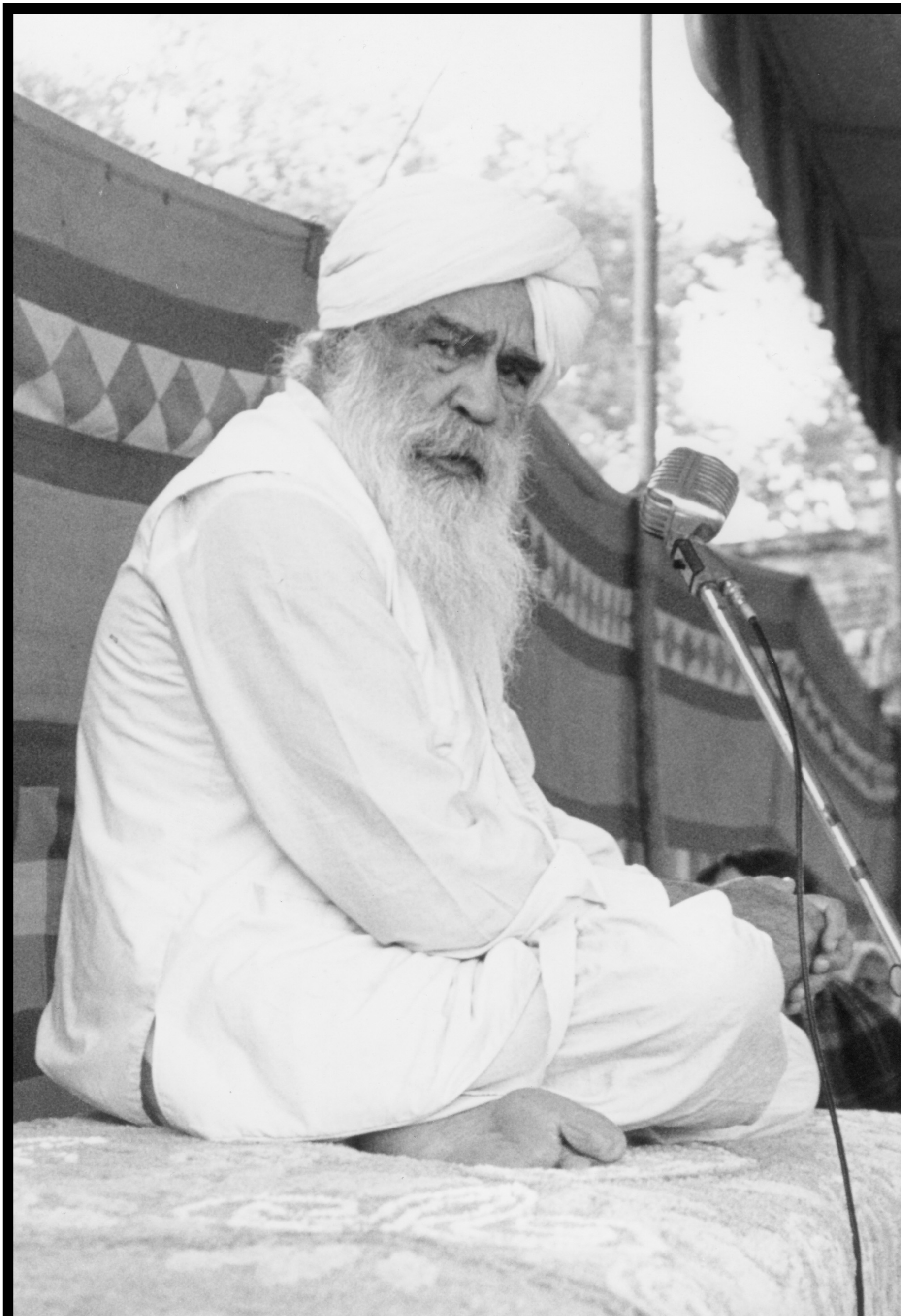

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से एक

उपदेश

यह उपदेश बहुत संक्षिप्त करके दिया गया है, गुरुओं द्वारा कही गई बातें बहुत संक्षेप में होती हैं लेकिन ये ठीक मुद्दे की होती हैं। अगर आप एक-एक पैसे की परवाह करेंगे तो उसके रूपये बन जाएंगे। इसी तरह अगर आप हर समय अपने मन को व्यस्त रखेंगे तो कुछ भी गलत नहीं होगा। इस विषय पर दिए गए मेरे संदेश पत्रों को पढ़ें और उनकी गहराई में जाएं।

अगर आप वर्तमान समय की परवाह नहीं करते और कभी-कभी घंटो तक परमात्मा की तरफ से बेपरवाह हो जाते हैं तो इतनी परेशानियां आती हैं जो आपके भजन-अभ्यास पर असर करती हैं। जब आप भजन पर बैठते हैं तो भूतकाल और भविष्य को भूल जाएं सिर्फ वर्तमान में जिएं इससे आपको भजन में कामयाबी मिलेगी। वे खाली घंटे जिनमें आपने अपने मन को व्यस्त नहीं रखा वे आपके भजन-अभ्यास पर असर करते हैं। इन सब बातों का इलाज यह है कि आप अपना हर घंटा शांति से बिना किसी से द्वेष भाव रखे, बिना किसी से मोह रखे भजन में बिताएं।

कबीर साहब कहते हैं, ''अपने जीवन के हर श्ँवास को गुरु को अर्पण करें। अपने प्रत्येक श्ँवास को गुरु के लिए भेंट बनाएं। ऐसा न करके हम अपने जीवन का बहुत कीमती खजाना बर्बाद कर रहे हैं।''

जिस तरह मरता हुआ इंसान और कुछ मिनट जीना चाहे तो वह जी नहीं सकता। हम किस तरह अपने समय को खत्म कर रहे हैं? जीवन का हर लम्हा बहुत कीमती है इसका सही इस्तेमाल करें, एक-एक श्ँवास बहुत कीमती है। जब मौत आती है तो हम

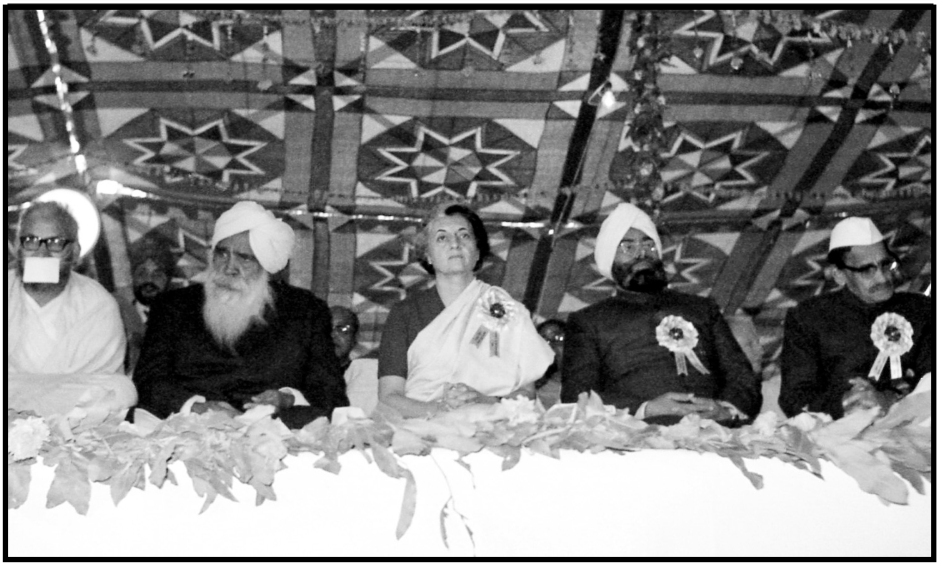

कहते हैं ओह! अगर मुझे कुछ और समय दिया जाता तो मैं यह कर लेता, वह कर लेता। लेकिन आपने बहुत बेरहमी से अपना समय बर्बाद कर दिया।

सन्त कहते हैं, ''अगर आप परमात्मा की याद में लगातार तीन दिन और तीन रातें बिता सकें तो आप परमात्मा के चरणों में पहुँच सकते हैं, क्या हम ऐसा कर सकते हैं?'' आप अपने मन में परमात्मा के अलावा किसी और का ख्याल न आने दें। हम आज से ही शुरू करते हैं लगातार सिमरन, खाना खाते हुए भी उसे न भूलें।

हम छोटी बातों की परवाह नहीं करते लेकिन बड़ी बातें वहीं से आती हैं। आपको यहाँ आए हुए कितने दिन हुए हैं? अगर आपने लगातार एक दिन और एक रात परमात्मा की याद में बिताया होता तो आप काफी बदल गए होते?

आओ! हम आज से ही शुरू करें, अभी से कल शाम तक कोई ख्याल नहीं लगातार सिमरन। ***

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

'शब्द-नाम'

स्वामी जी महाराज की बानी

DVD-506

कोलोराडो

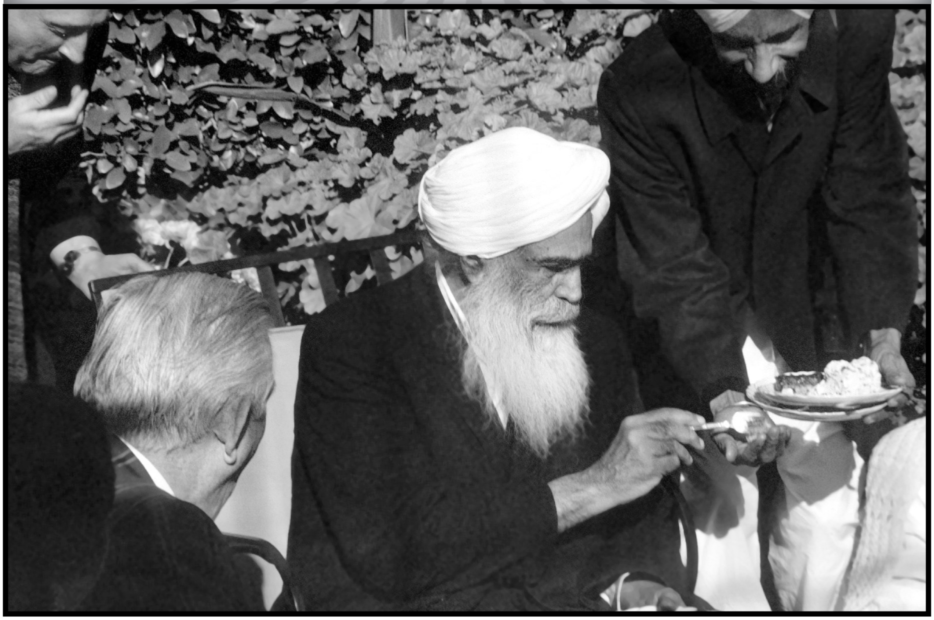

गुरु मेरे जान पिरान, शब्द का दीन्हा दाना।।

दुनिया के अंदर बड़े-बड़े परोपकारी आए। जिन्होंने यहाँ तक परोपकार किया कि अपना सुख आराम छोड़कर दूसरों के भले की खातिर दुख सहने में कोई परहेज नहीं किया। कुछ लोगों ने सराय बनवाई, कुछ लोगों ने स्कूल बनवाए और प्यासों के लिए टयूबवेल लगवाए। अपनी-अपनी जगह सब आदमियों ने परोपकार किए।

हुजूर महाराज जी एक जेलखाने की मिसाल देकर समझाया करते थे कि एक जेलखाने में बहुत सारे कैदी हैं। एक परोपकारी आता है कैदियों को अच्छा खाना नहीं मिलता वह बहुत सा पैसा खर्च करके उन कैदियों के लिए अच्छे खाने की सहूलियत करवा

देता है, कैदियो को अच्छा खाना तो मिल गया लेकिन वे कैदी के कैदी ही रहे। इसी तरह सर्दी का मौसम आ गया। कैदियों को गर्म कपड़ों की जरूरत पड़ी, दूसरे परोपकारी ने कैदियों के लिए पैसे खर्च करके गर्म कपड़ों का इंतजाम कर दिया, उसने भी अच्छा परोपकार किया लेकिन वे कैदी के कैदी ही रहे। तीसरे परोपकारी के पास उस जेलखाने की चाबी है। वह परोपकारी ताला खोलकर कहता है, ''मैंने आप सबको आजाद कर दिया।'' कैदी आजाद होकर अपने-अपने घरों में आ गए और अपनी मर्जी मुताबिक अच्छी जिंदगी व्यतीत करने लगे।

हम जानते हैं कि सबने अपनी-अपनी जगह परोपकार किया लेकिन सबसे बड़ा परोपकार उसका है जिसने उन कैदियों को आजाद कर दिया। यह तो एक बाहर की मिसाल है। हम जो कुछ भी आँखों से देखते हैं यह सब काल का एक बहुत बड़ा जेलखाना है। हमारी आत्मा इस जेलखाने तन के अंदर कैद होकर अपने आपको भूल गई है।

इस जेलखाने से निकलने का एक ही जरिया है जिसकी कुंजी नाम है। इस कुंजी को लगाने वाला महात्मा है। सबसे बड़ा परोपकार महात्मा का है। सन्त-महात्माओं का दान सब दानों से ऊँचा दान होता है क्योंकि यह आत्मिक दान है। सन्तों का उपकार सब उपकारों से ऊँचा है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

जन परोपकारी आए जियादान दे भक्ति लायण हरि सो लैंण मिलाए।

आमतौर पर जिस दिन हमारा जन्म होता है हम हर साल उस दिन बड़ी खुशी से बर्थडे मनाते हैं लेकिन महात्मा अपना तजुर्बा

बताते हैं कि उस दिन तो आत्मा की मौत हुई होती है। आत्मा उस दिन शरीर के अंदर कैद हुई होती है।

हमारा असली जन्म दिन वह है जिस दिन हमें सतगुरु से नाम मिलता है, हम गुरु के घर पैदा होते हैं। हम उस दिन मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर सच्चे '**शब्द-नाम**' के साथ जुड़ जाते हैं। स्वामी जी महाराज अपने गुरु की महिमा बयान करते हुए कहते हैं, ''गुरु ही मेरे जान और प्राण हैं क्योंकि गुरु ने मुझे '**शब्द-नाम**' का दान दिया।''

शब्द मेरा आधार, शब्द का मर्म पिछाना।।

आप कहते हैं, ''शब्द ही मेरी जिंदगी का आसरा है मुझे शब्द का भेद मिल गया है, मैं शब्द की ताकत को समझ गया हूँ। जो ताकत दुनिया में काम करती है दुनिया को पालती है, लय करती है वह शब्द ही है। वह शब्द लिखने-पढ़ने, बोलने में नहीं आता और वह शब्द गाने-बजाने वाला भी नहीं है। वह शब्द किसी भी भाषा में नहीं लिखा जाता।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

अक्खां बाजो देखना बिन कन्ना सुनना।
पैरां बाजो चलना बिन हत्था करना।
जीभा बाजों बोलना एयों जीवित मरना।
नानक हुक्म पछाण के त्यों खसमें मिलना।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''जब तक हमें पूरा सतगुरु नहीं मिलता, वह शब्द का दान नहीं देता तब तक चाहे हम कितनी भी योनियों में भटककर आ जाएं हमारा जन्म-मरण खत्म नहीं होता।''

अनेक योनि भ्रमें फिरे बिन सतगुरु मुक्ति न पाए।
फिर मुक्ति पाए लग चरणी सतगुरु शब्द सुनाए।।

क्या गुण गाऊँ शब्द, शब्द का अगम ठिकाना।।

आप कहते हैं, ''मैं उस शब्द की महिमा बयान नहीं कर सकता क्योंकि उसका ठिकाना बहुत ऊँचा है। वह शब्द अगम लोक सतलोक से आ रहा है। दिखाई देने वाली ओर दिखाई न देने वाली सृष्टि शब्द के आधार पर है।''

बानियों में महात्मा ने शब्द की महिमा की है। गुरु नानकदेव जी से सिक्खों ने पूछा, ''शब्द की क्या ताकत है, शब्द ने क्या पैदा किया है और वह शब्द कहाँ रहता है?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

शब्दे धरती शब्दे आकाश शब्दे शब्द भया प्रकाश।
सगली सृष्टि शब्द के पाछे नानक शब्दे शब्द घट आछे।।

जिस तरह इंजन की संभाल के लिए बॉडी बनाई जाती है। बॉडी के अंदर कलपुर्जे लगाए जाते हैं, जैसे तेल का पाईप और उसको साफ करने के लिए फिल्टर वगैरहा लगाए जाते हैं जिससे इंजन में करंट पहुँचता है। अगर हम इंजन बनाकर रख दें और उसमें करंट न छोड़ें तो उसमें लगे हुए कलपुर्जे हरकत में नहीं आते हम उससे कोई फायदा नहीं उठा सकते।

इसी तरह यह शरीर इंजन की बॉडी की तरह है, इसके अंदर परमात्मा ने नाड़ियों में खून का इंतजाम किया है कि किस तरह खून साफ हो रहा है? खराब खून फेफड़ो के अंदर जाता है फिर साफ होकर शरीर में आ जाता है, किस तरह इसमें से थूक और खून को अलग किया जाता है। किस तरह परमात्मा हमारे अंदर यह इंतजाम कर रहा है कि खून नीचे से ऊपर जाता है और ऊपर से नीचे आता है।

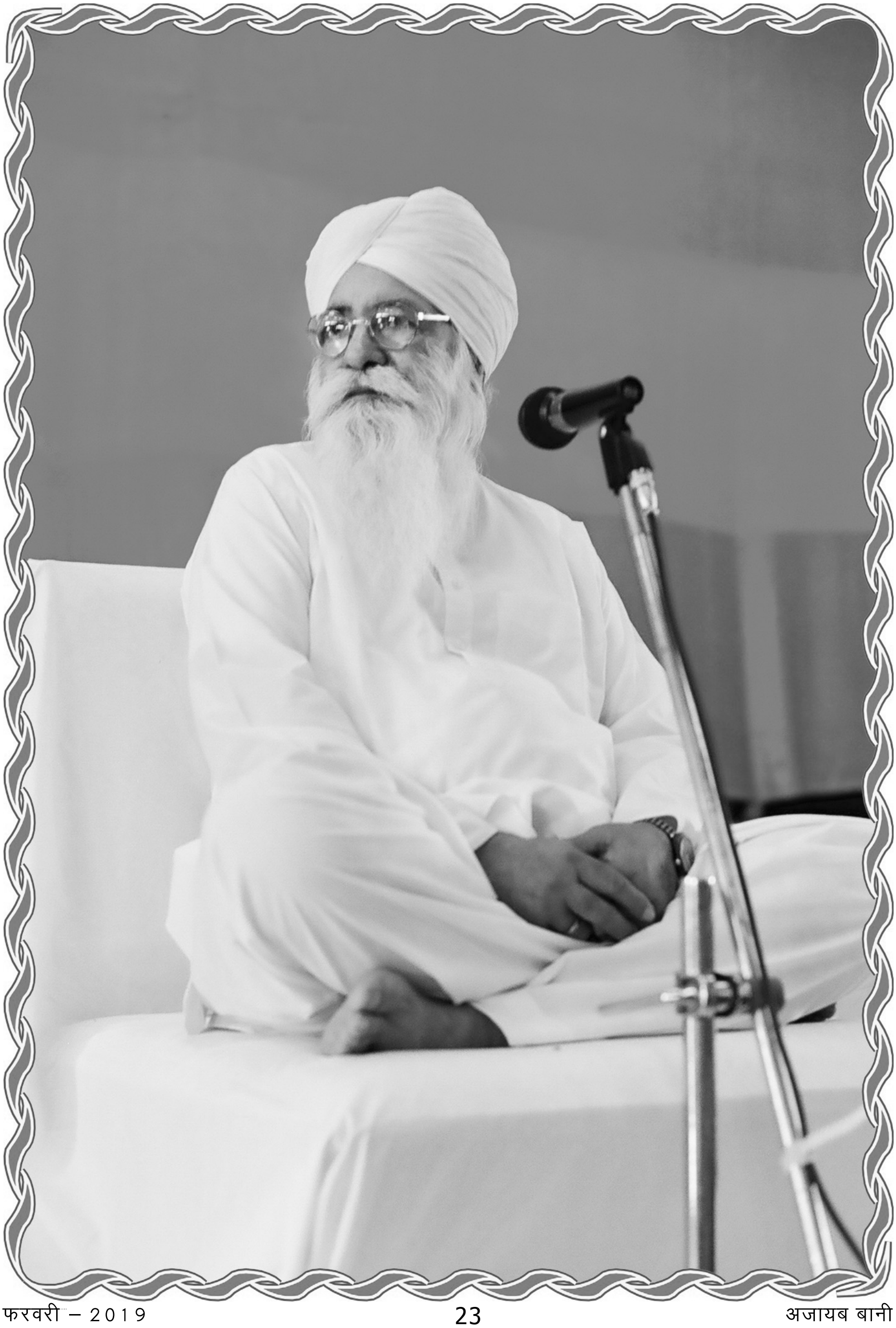

परमात्मा जब तक अपना करंट आत्मा इस शरीर में नहीं रखता तब तक न तो हमारी आँखें फड़क सकती है, न हम कानों से आवाज सुन सकते हैं, न मुँह से बोल सकते हैं, न टाँगों से चल-फिर सकते हैं। परमात्मा का करंट होने के कारण ही हमारे हाथ-पैर, आँख-मुँह सब हरकत में आते हैं। तुलसी साहब कहते हैं:

है घट में सूझत नाहीं लानत ऐसी जिंद।
तुलसी या संसार को भया मोतियाबिंद।।

बिना शब्द सब जीव, धुँध में फिरें भरमाना।।
जल पाषान पूजत रहें, रहें कागज अटकाना।।

अब आप कहते हैं, ''दुनियादार परमात्मा की भक्ति को छोड़कर कोई पत्थर को पूज रहा है कोई पानी को पूज रहा है तो कोई कागज को पूज रहा है। महात्मा हमारे अंदर से एक भ्रम निकालते हैं लेकिन हम उनके जाने के बाद सैंकड़ो भ्रम डालकर बैठ जाते हैं।'' धन्ना भक्त अपनी बानी में लिखते हैं:

जो पत्थर की पाईं पाए, ताँकी घाल अजाईं जाए।
ठाकुर हमरा सद बोलंता, सर्व जिआं को प्रभ दान देता।।

हिन्दुस्तान में लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया और ग्रंथों में भी यह लिख दिया कि धन्ना पत्थर पूजक था। उसे परमात्मा पत्थर में से मिला लेकिन धन्ना कहते हैं कि मुझे परमात्मा सन्तों से मिला, सन्तों ने मुझ पर मेहर की।

महाराज सावन सिंह जी धन्ना जाट की बहुत अच्छी कहानी सुनाया करते थे। पिछले जन्म में धन्ना परम सन्त था और त्रिलोचन धन्ना का सेवक था लेकिन त्रिलोचन ने नाम लेकर कमाई नहीं की फिर धन्ना, जाट घराने में आया और त्रिलोचन स्वर्ण जाति पंडितों

के घर में आया। हिन्दुस्तान में पंडित, जाट को नहीं पूज सकते बल्कि जाटों से कहते हैं कि हम आपके गुरु हैं। सन्त जिसे नाम दे देते हैं उसे देर-सवेर जरूर सच्चखंड लेकर जाते हैं।

सेवक की खातिर गुरु को सब कुछ ही करना पड़ता है इसलिए धन्ना भोला-भाला जाट बना। त्रिलोचन पत्थरों को ठाकुर बनाकर पूजता था। जब त्रिलोचन पूजा करता तो धन्ना चुप करके उसके पास बैठ जाता। आखिर धन्ना ने एक दिन त्रिलोचन से कहा, ''दादा! ये बड़े-बड़े पत्थर तो दस-दस सेर के हैं और ये छोटे-छोटे पत्थर छँटाक-छँटाक के हैं।'' त्रिलोचन ने उसे भोला समझकर कहा, ''ये पत्थर नहीं ठाकुर हैं।'' धन्ना ने त्रिलोचन से पूछा कि इनकी पूजा करने से क्या मिलता है? त्रिलोचन ने कहा, ''भगवान खुश होता है।'' धन्ना ने कहा, ''मुझे भी एक ठाकुर दे दे मैं भी अपने घर ले जाकर इसकी पूजा करूंगा।''

त्रिलोचन ने उसे भोला जाट समझकर कहा अगर तू मुझे एक गाय दे दे तो मैं तुझे एक ठाकुर दे दूंगा। धन्ना ने दूध देने वाली एक गाय लाकर त्रिलोचन को दे दी। त्रिलोचन ने उसे पत्थर का एक बट्टा देकर कहा, ''तू रोज इसे नहलाकर इसकी पूजा करना।''

धन्ना ने उस पत्थर को ले जाकर दूर रख दिया। त्रिलोचन रोज पूजा करता मूर्तियों के आगे प्रशाद रखकर खुद खा जाता। पंडित मूर्ति के मुँह पर प्रशाद लगाकर खुद खा जाते हैं। मूर्ति के मुँह पर जो कुछ चिकनाहट लगी होती है उस पर चींटियां आ जाती हैं इसलिए चिकनाहट पर राख लगा देते हैं।

धन्ना ने त्रिलोचन से कहा, ''तू ठाकुरों से ठग्गी करता है।'' त्रिलोचन ने कहा, ''ठाकुर होम के भूखे होते हैं खाते नहीं हैं।''

धन्ना ने त्रिलोचन से कहा, '' तूने मुझे जो ठाकुर दिया था वह तो रोज खाना खाता है, मेरे सारे काम करता है, मेरा कुआँ चलाता है खेतों में हल चलाता है।'' त्रिलोचन बहुत परेशान हुआ, उसने कहा क्या तू मुझे दिखाएगा?

कायदा यह है कि जिसने परमात्मा को देखा है उसके लिए परमात्मा को दिखाना क्या मुश्किल है? धन्ना ने कहा हाँ मैं तुझे परमात्मा दिखाऊंगा। वे दोनों जब थोड़ा आगे गए तो धन्ना ने कहा देख! ठाकुर मेरा कुआँ चला रहा है। मेरी गायों को ला रहा है। त्रिलोचन ने कहा मुझे दिखाई नहीं दे रहा। त्रिलोचन को जाति का बहुत अभिमान था। धन्ना ने त्रिलोचन से कहा कि तू मेरी टाँगों में खड़ा होकर देख तब तुझे परमात्मा दिखाई देगा। गरज सबसे मीठी होती है। त्रिलोचन धन्ना की टाँगों में खड़ा हो गया।

जब डॉक्टर चीरा देता है तो डॉक्टर नहीं चाहता कि इसके अंदर कोई गंदा मवाद रह जाए। धन्ना ने त्रिलोचन से कहा कि तू लोगों का खाता है, मेहनत नहीं करता। तुझमें ये-ये ऐब हैं। त्रिलोचन ने कहा मैंने सारे ऐब छोड़े। जब त्रिलोचन बिल्कुल प्योर हो गया तो धन्ना ने अपनी तवज्जो देकर त्रिलोचन को परमात्मा दिखा दिया।

आप देखें! धन्ना पत्थर पूजक था या त्रिलोचन पत्थर पूजक था? धन्ना तो त्रिलोचन को निकालने के लिए ही आया था। धन्ना त्रिलोचन की खातिर ही भोला-भाला जाट बना लेकिन लोगों ने धन्ना को ही पत्थर पूजक बना दिया। कबीर साहब ने भी मूर्ति पूजा की खातिर बहुत संघर्ष किया आखिर लोगों ने उनकी भी मूर्ति बनाकर पूजना शुरू कर दिया। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पत्थर पूजा सबसे निकृष्ट भक्ति है। यह नाश होने वाली भक्ति है, किसी भी लेखे में नहीं।'' कबीर साहब कहते हैं:

पाहन परमेश्वर किया पूजे सब संसार ।
इस भरवासे जो रहे बूड़े काली धार।।

मैं कई बार अपने बचपन की कहानी सुनाया करता हूँ कि आमतौर पर गाँव के गुरुद्वारे में हम कई प्रेमी सेवा किया करते थे। हम सर्दियों में गुरुग्रंथ साहब के ऊपर अच्छी रजाई देकर रखते थे। एक दिन एक सिक्ख गुरुद्वारे में रात काटने के लिए आया उस समय सर्दी बहुत थी। उस सिक्ख ने कहा कि मुझे ओढ़ने के लिए कोई रजाई दे दें। हमारे पास कोई और रजाई नहीं थी जो हम उसे दे देते। उसकी निगाह उस रजाई पर पड़ी जो हमने गुरुग्रंथ साहब के ऊपर दी हुई थी। उसने कहा कि मुझे सर्दी लग रही है मुझे यह रजाई दे दें, ग्रंथ को कौन सी सर्दी लगती है।

हमने बात समझने की बजाय उसकी बांह पकड़कर उसे गुरुद्वारे से बाहर कर दिया कि तू गुरुग्रंथ की बेअदबी करता है। उसने कहा कि सर्दी में तो आप गुरुग्रंथ पर रजाई उढ़ा देते हैं क्या गर्मी में इसे नहलाते भी हैं? हमारे पास इस बात का कोई जवाब नहीं था।

ग्रंथ पूजने के काबिल हैं। हमने ग्रंथों को पढ़ना है उनमें जो हिदायतें लिखी हैं हमने उनके ऊपर चलना है अगर हम ग्रंथों को पढ़कर रख दें या उनके आगे धूप जलाएं तो इसका क्या फायदा है?

हिन्दुस्तान में लोग चार वेदों को इसी तरह पूजते थे उनके आगे धूप जलाते थे। गुरु नानकदेव जी ने लोगों को इस भ्रम में से निकालने के लिए बानी में बहुत कुछ लिखा है कि वेद पढ़ने के लिए हैं हमने इनकी तालीम पर अमल करना है न कि इनके आगे धूप जलानी है। गुरु नानकदेव जी ग्रन्थियों, पादरियों और पुजारियों को वेद व्यापारी कहकर बयान करते हैं:

वेद व्यापारी नानका लद न चलया कोय।

आप कहते हैं देखेंगे! जब अंत समय आएगा तो क्या ये इन ग्रंथो को साथ ले जाएंगे? लेकिन गुरु नानकदेव जी के जाने के बाद उनके ही अनुयायियों ने गुरुग्रंथ साहब को पाँचवा वेद कहना शुरू कर दिया उसकी तालीम को मानने की बजाय ग्रंथ को ही मत्थे टेकने शुरू कर दिए। हम पढ़ने पर जोर देते हैं समझने पर जोर नहीं देते। महात्मा हमें कहते हैं:

पढ़या ईल्म अमल न कीता, पढ़या फेर पढ़ाया की।
आदत खोटी न गँवाई, मत्था फेर घिसाया की।।

हमारे पाठी जी आस-पास के गाँव में पाठ सुनाते थे इनका अच्छा मान-तान था। यह खुद तो अच्छी तरह हल्वा या परोंठों के साथ पेट भर लेते, बाकी लोग आकर बैठे रहते कि कब भोग डालेंगे। नाजर सिंह हमारे इलाके का अच्छा सरदार है अब वह हँसकर कहता है, ''पाठिया! अगर सन्त न आते तूने सारी जिंदगी हमारी जान नहीं छोड़नी थी।'' जो पत्थर की मूर्ति अपने ऊपर से मक्खी नहीं उड़ा सकती उसे पूजने से हमें क्या मिलेगा?

गुरु गोबिंद सिंह जी का एक सिक्ख नैणा देवी के मंदिर में गया वहाँ उसने मूर्ति का नाक तोड़ दिया। पुजारी ने उस सिक्ख की बाँह पकड़ ली और उसके ऊपर अदालत में मुकदमा चलाया। उस सिक्ख ने कहा मैंने नाक नहीं तोड़ी।

आखिर फैसला गुरु गोबिंद सिंह जी के पास आया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''आप मूर्ति से पूछ लें कि तेरा नाक किसने तोड़ा है? अभी तो वह मौजूद है।'' वहाँ के राजा ने कहा, ''क्या कभी मूर्ति भी बोली है?'' फिर गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''अगर मूर्ति कभी बोली नहीं तो आपको क्या मुराद देगी?''

मन मत ठोकर खाय, गये चौरासी खाना।।
बहु विधि बिपता जीव को, बिन शब्द सुनाना।।

परमात्मा ने हमें अपने मिलाप का मौका बख्शा था। इसमें आकर हमने '**शब्द-नाम**' की कमाई नहीं की बल्कि पत्थर-पानी को पूजने लग गए और चौरासी में चले गए।

जहाँ आसा तहाँ बासा।

जीव ने '**शब्द-नाम**' की कमाई के बगैर बहुत बिपता भोगी।

सतगुरु की सेवा बिना, नहिं लगे ठिकाना।।

अब आप कहते हैं कि जब तक हमें सतगुरु नहीं मिलते, शब्द का दान नहीं मिलता तब तक हम अपने ठिकाने सच्चखंड नहीं पहुँच सकते जहाँ से आत्मा बिछुड़कर संसार में आई थी।

शब्द भेद बिन सतगुरु, क्या कहें अजाना।

आप कहते हैं कि पूरा गुरु ही हमारे अंदर शब्द टिका सकता है। जो लोग खुद '**शब्द-नाम**' की कमाई नहीं करते वे शब्द का भेद कैसे जान सकते हैं? अंदर काल के भी शब्द हैं और काल की भी ज्योत है। अंदर यह झगड़ा पूरा सतगुरु ही नबेड़ सकता है। पूरा गुरु ही हमें '**शब्द-नाम**' के साथ जोड़ सकता है। जिस बेचारे ने खुद कभी शब्द-नाम की कमाई नहीं की उसे क्या पता है कि शब्द किस देश से आता है, शब्द का क्या रूप रंग है, शब्द की क्या ताकत है?

मन इन्द्री बस में नहीं, तो काल चबाना।।

अब आप कहते हैं, ''जिन लोगों का मन और इन्द्रियां अपने बस में नहीं उसका नतीजा यह होगा कि काल उन्हें सजा देगा।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

मंत्र होय दुयां नागी लग्गा जाय।
आपण हत्थी आपणे दे कूचा आपे लाय।।

वह बेचारा मंत्र तो बिच्छु का जानता है लेकिन नाग को पकड़कर अपने हाथ से अपने ही घर को आग लगा रहा है। कमाई तो की नहीं, लोगों को नाम दे रहा है। यह एक किस्म का आग के साथ खेल रहा है, काल इसे माफ नहीं करेगा।

मैं आमतौर पर कहा करता हूँ कि आप महात्मा की कमाई देखें! क्या उसने दस या पंद्रह साल कोई कमाई की है, अकेले रहकर अभ्यास किया है? क्योंकि रूहानियत का काम कोई रूहानियत का माहिर ही कर सकता है।

राधास्वामी सरन ले, सब भाँति बचाना।

अब आप कहते हैं, ''हम गुरु की कृपा से उस कुलमालिक की शरण में पहुँचे हैं। हम हर तरह से काल के भ्रमों से, काल के जाल से बच गए हैं।''

मेहर दया छिन में करें, दें अगम खजाना।।

जब हम गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं, 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं तब गुरु हमें परमात्मा के आगे खड़ा करके बख्शवा देता है। गुरु परमात्मा से कहता है, ''यह तेरा जीव है भूल बख्शवाने आया है।'' परमात्मा मेहर करके हमें नाम का खजाना दे देता है फिर हम जितना मर्जी खर्च करें उसमें कोई कमी नहीं आती।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में **'शब्द-नाम'** की महिमा की है। हमें भी चाहिए कि हम शब्द-नाम की महिमा करें।

***

30 जुलाई 1980

आश्रम

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान 2 नवम्बर 1981

एक प्रेमी :- *जब परमात्मा कृपाल आपको वापिस सच्चखंड बुलाएंगे तब हम आपके साथ जाना चाहेंगे। आप हमें न भूलना, हम तैयार रहेंगे ताकि आप हमें अपने साथ ले जा सकें।*

बाबा जी :- आपको कभी ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि आप सच्चखंड नहीं जाएंगे। मेरे प्यारे गुरु ने मुझे आत्माओं को वापिस सच्चखंड ले जाने की ड्यूटी दी है। मैं अपनी ड्यूटी को प्यार और श्रद्धा से निभा रहा हूँ। आपको कभी भी नहीं सोचना चाहिए कि आप सच्चखंड नहीं जाएंगे। जब समय आएगा तब आपको पता चलेगा कि मैंने आपके लिए क्या किया है।

एक प्रेमी :- *क्या हम यहाँ* ***आश्रम*** *में होने वाले शाम के सतसंग का समय वहाँ कनाडा आश्रम में अपना सकते हैं? हम रात को 8.30 बजे ही सतसंग कर लें तो हम सुबह 3.00 बजे उठ सकें।*

बाबा जी :- हाँ! आपको ऐसा करना चाहिए अगर आप समय पर साऐंगे तो समय पर उठ सकेंगे।

एक प्रेमी :- *आपने दर्शनों के समय हमें कनाडा* ***आश्रम*** *की जगह को खूबसूरत बनाने के लिए कुछ रूहानी बातें बताई थी। आपने वहाँ पर शान्ति बनाए रखने के फायदे और अभ्यास व सतसंग के कार्यक्रमों को अनुकूल बनाने के लिए कहा था जिससे हम लोग जल्दी सोकर सुबह जल्दी उठ सकेंगे। क्या आप कोई और सलाह देना चाहेंगे जिससे कि उस खूबसूरत जगह* ***आश्रम*** *की पवित्रता व रूहानी चार्जिंग कायम रह सके?*

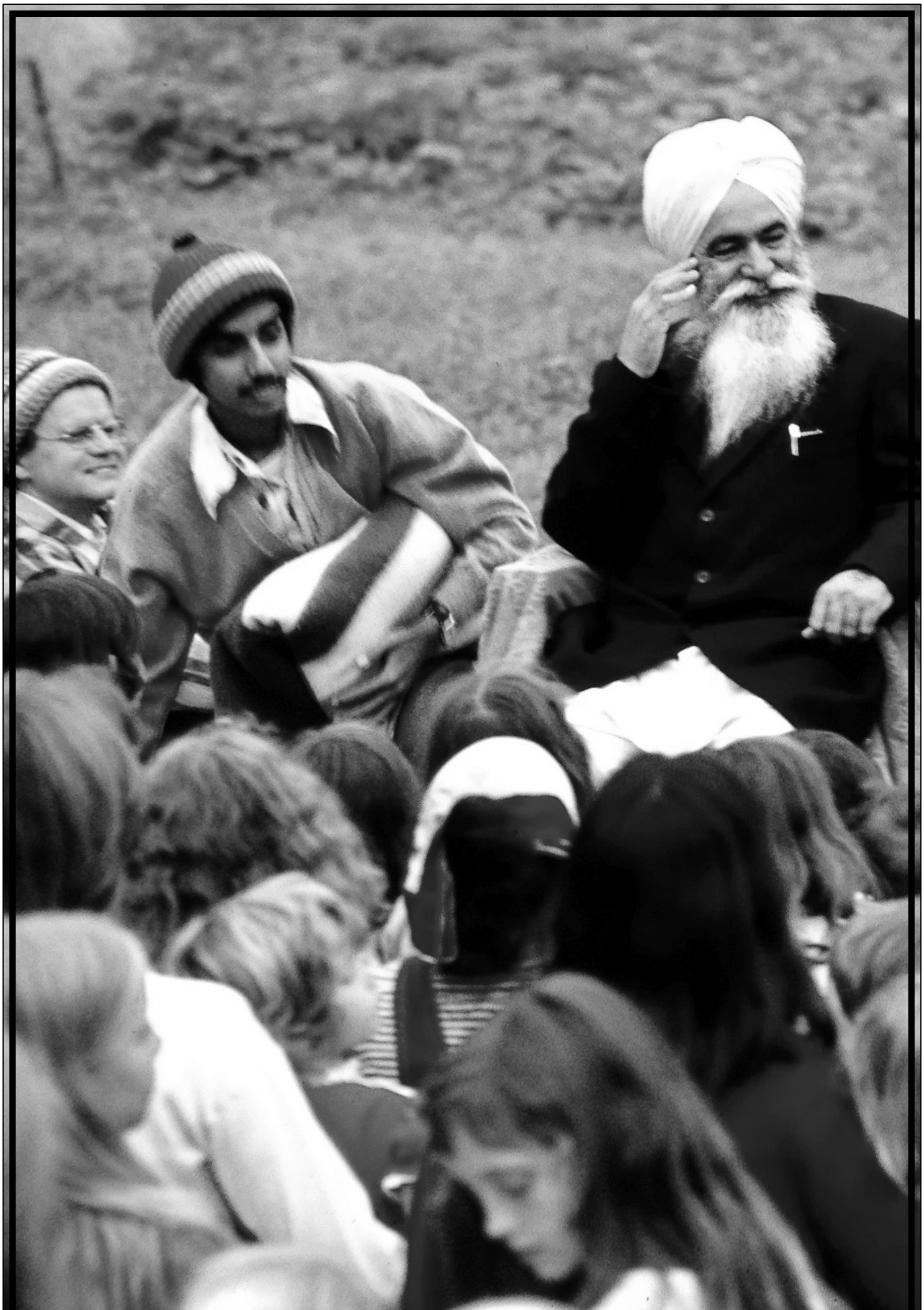

बाबा जी :- मैंने आपको जो खास बातें कही थी आप उन बातों पर अमल करें। हुजूर कृपाल का वाक है, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर भजन में बैठें। आप जब तक अपनी आत्मा को खुराक न दे लें तब तक खाना न खाएं।''

अगर सेवक गुरु की शिक्षा के अनुसार जीवन जी रहा है और गुरु के हुक्मों की पालना कर रहा है तो गुरु उसकी हर मुनासिब मदद करता है। असल में गुरु सेवक की मदद करके बहुत खुश होता है। अब आपका फर्ज है कि आप गुरु की शिक्षा के अनुसार जीवन जिएं।

एक प्रेमी :- *पिछले नवम्बर में जब हम यहाँ से वापिस गए थे तो हमने कनाडा आश्रम के प्रेमियों को* ***आश्रम*** *में शान्ति रखने की बिनती बताई थी जोकि आश्रम के सुचारू रूप से संचालन के लिए बहुत जरूरी है। कुछ लोग महसूस करते है कि* ***आश्रम*** *में मेल-मिलाप करना भी जरूरी है। वे लोग यह महसूस करते हैं कि चुप रहना और प्यार एक साथ नहीं हो सकता।*

बाबा जी :- मैंने आपको पहले भी आश्रम में शान्ति बनाए रखने के लिए कहा था और अब भी आपको आश्रम में शान्ति बनाए रखने के लिए कहूंगा। हम **आश्रम** में औरो को खुश करने के लिए नहीं बल्कि परमात्मा को खुश करने के लिए आते हैं।

मैंने आपको और भी कई बातें बताई थी जिससे आप **आश्रम** की पवित्रता को बेहतर बना सकते हैं। जब आपको पता लगे कि यहाँ आकर लोग भजन नहीं करते बहुत ज्यादा बातें करते हैं तो आप एक तख्ती लिखकर लगा दें कि यह जगह भजन करने के लिए है आपस में गप्पे मारने के लिए नहीं है।

***

धन्य अजायब

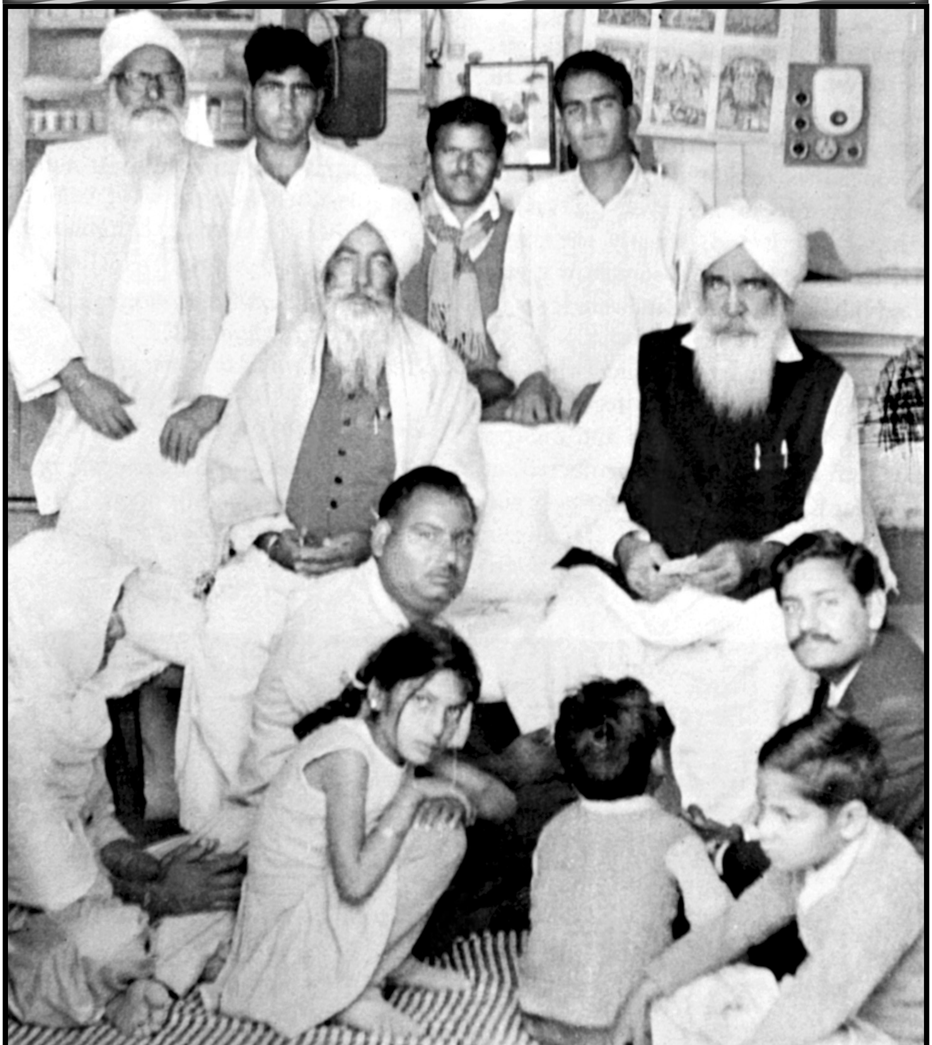

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रमः

01 से 03 मार्च 2019

31 मार्च से 02 अप्रैल 2019